



नवम्बर: 2021

वर्ष : 5 अंक : 2

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



संस्थान का मासिक समाचार, नवम्बर 2021 आपके समक्ष प्रस्तुत है। सर्वप्रथम आप सभी को दीपावली की ढेरों शुभकामनायें।

यदि नवम्बर महीने की बात कि जाए तो यह मास महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के धनी जैसे स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू (14 नवम्बर) का महीना है जिसे बाल दिवस के रूप में पूरे देश में मनाया जाता है। इसी माह में संविधान सभा ने दिनांक 26 नवम्बर 1949 को स्वाधीन भारत के संविधान को अंगीकार किया था जो 26 जनवरी 1950 से प्रभावी हुआ। इसी माह में देश के विख्यात भौतिक विज्ञानी, डा. सी वी रमण का जन्म 7 नवम्बर 1888 में तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली नामक स्थान में हुआ था। डा. रमण पहले भारतीय वैज्ञानिक थे जिन्हें विज्ञान में सन् 1930 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। यह सम्मान उन्हें अपने एक महत्वपूर्ण आविष्कार 'रामन प्रभाव' के लिए दिया गया था।

नवम्बर महीने की अन्य विशेषताओं में प्रमुख है, दीपावली का त्योहार जो पूरे देश भर में मनाया जाता है। यह कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है और भारत के सबसे बड़े और सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। दीपावली दीपों का त्योहार है जो आध्यात्मिक रूप से यह 'अन्धकार पर प्रकाश की विजय' को दर्शाता है। अतः नवम्बर मास प्रत्येक पहलू की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण महीना है।

प्रस्तुत अंक में अक्टूबर 2021 में संस्थान की गतिविधियों और उपलब्धियों को प्रस्तुत किया गया है।

अंत में, मैं आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

बि.के.दास

(बसन्त कुमार दास)

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में बहु-सुविधा प्रशिक्षण परिसर का उदघाटन



भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) में अनुसंधान संबंधित समस्त सुविधायें व्याप्त हैं। इस दिशा में संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर, कोलकाता में दिनांक 6 अक्तूबर 2021 को संस्थान परिसर में आधुनिक सुविधाओं से लैस एक बहु-सुविधा प्रशिक्षण परिसर का उदघाटन किया गया। इस परिषद का उदघाटन डा. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के कर-कमलों से हुआ। इस अवसर पर डा. जयकृष्ण जेना, उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली उपस्थित थे। साथ ही, इस समारोह में डा. अनिल राय, सहायक महानिदेशक (आईसीटी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली; डा. गौरांग कर, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान

संस्थान, कोलकाता; डा. डी. बी. शक्यवार, निदेशक, भाकृअनुप-निनफेट; डा. एस. के. रॉय, कार्यकारी निदेशक, भाकृअनुप-कृषि तकनीक, अनुप्रयोग संस्थान, कोलकाता; डा. बी. एस. महापात्र, कुलपति, बिधान चन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, मोहनपुर, नदिया, डा. राम नारायण साहू, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के साथ संस्थान के निदेशक, डा. बसंत कुमार दास, समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

सिफरी का यह बहु-सुविधा प्रशिक्षण परिसर के सभागार में एक साथ 250 लोगों के बैठने की सुविधा है। इस विशेष दिन को





उक्त परिसर के उदघाटन के साथ संस्थान की आईसीपी-एमएस सुविधा का उदघाटन एवं मुख्य भवन (द्वितीय तल) का शिलान्यास किया गया। कार्यक्रम का आरंभ गंगा नदी में मछलियों की रैंचिंग के साथ किया गया जिसमें लगभग 75 हजार मछली के अंगुलिकाओं को गंगा नदी में डाला गया। इस कार्यक्रम में माननीय डा. त्रिलोचन महापात्र, डा. जयकृष्ण जेना, डा. अनिल राय, डा. बसंत कुमार दास, संस्थान कर्मियों के साथ नमामी गंगे परियोजना से जुड़े सदस्यगण उपस्थित थे। तत्पश्चात, बहु-सुविधा प्रशिक्षण परिसर का उदघाटन तथा मुख्य भवन (द्वितीय तल) का शिलान्यास माननीय डा. त्रिलोचन महापात्र के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर उद्घाटित परिसर के सभागार में एक सभा



का आयोजन किया गया। इस सभा के आरंभ में माननीय डा. त्रिलोचन महापात्र तथा डा. जेना तथा अन्य गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया गया। संस्थान के निदेशक ने अपने स्वागत संभाषण में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में योगदान और महत्व पर प्रकाश डाला और यह बताया कि परिषद



के उचित मार्गदर्शन का ही फल है कि सिफरी को सर्वश्रेष्ठ संस्थान का पुरस्कार, “सरदार पटेल उत्कृष्ट संस्थान पुरस्कार” प्राप्त हुआ है। इसके अलावा संस्थान में आईसीपीएमएस (ICP-MS : Inductively coupled plasma mass spectrometry) के द्वारा जल में बहुत कम





सांद्रता में धातुओं का पता लगाया जा सकता है। इस उपकरण से अंतर्स्थलीय खुले जलों में भारी धातुओं के प्रदूषण का परिमाणीकरण तथा मानदंड तय किया जा सकता है। निदेशक महोदय ने संस्थान की उपलब्धियों पर विस्तृत तौर पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि गत 5 वर्षों में हमारे प्रकाशनों का इम्पैक्ट फैक्टर बढ़ा है। लगभग 46 प्रकाशनों का इम्पैक्ट फैक्टर 5 से अधिक तथा 197 उद्धरण हैं। इस वर्ष के 3 प्रकाशनों का इम्पैक्ट फैक्टर 10 से अधिक है। कई उत्पादों का वाणिज्यिकरण और पेटेंट किया गया है। इसके अलावा संस्थान हिलसा मछली और गांगेय डॉल्फिन के संरक्षण पर कार्य कर रहा है। डा. जे. के. जेना, उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने कहा कि इस बहु-सुविध प्रशिक्षण परिसर का उदघाटन बहुत ही शुभ दिन (महालाया) और आज़ादी के 75वें वर्ष अर्थात आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में किया

गया है। इसके लिए उन्होंने सभी संस्थान कर्मियों को धन्यवाद दिया। उन्होंने संस्थान के प्रकाशनों की प्रशंसा की। माननीय डा. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने अपने संभाषण में सर्वप्रथम कोविड महामारी पर प्रकाश डाला और कहा कि इस महामारी के कारण ना जाने कितने हमारे सहकर्मी भी इसके





चपेट में आ चुके हैं जो बहुत दुख की बात है। अतः हम सभी को कोविड गाइडलाइन का पालन करना चाहिए। उन्होंने आगे यह बताया कि परिषद के संस्थानों को प्रति दिन मीडिया में अपने गतिविधियों अथवा उपलब्धियों का प्रकाशन करना चाहिए क्योंकि सूचना से ही समृद्धि प्राप्त होगी। इस प्रकार के प्रयास से संस्थान की लोकप्रियता और सर्वप्रियता बढ़ेगी और तथा किसानों को विकसित प्रौद्योगिकियों/उत्पादों के बारे में जानकारी मिलेगी। इससे किसानों में जागरूकता के साथ आजीविका के अवसर और आय भी बढ़ेगी। परिषद ने आजादी के 75वें वर्ष में परिषद की उपलब्धियों और कार्यक्रमों पर 75 व्याख्यानों का आयोजन किया है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक संस्थान को प्रायः प्रत्येक दिन किसी एक

अभियान पर फोकस करना चाहिए। हमें महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रयास करना चाहिए। उन्होंने आगे बताया कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने किसानों के लिए वित्तीय सहायता प्रबंध के साथ जलवायु अनुकूल प्रजातियों, प्रौद्योगिकियों और पद्धतियों के विकास पर जोर दिया है। हमें किसानों के प्रति लगन और दृढ़ता से कार्य करना होगा। हमारा ध्येय निस्वार्थ सेवा तथा सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए जिससे हमारा देश प्रगति के पथ पर और भी अग्रसर होगा। इस कार्यक्रम में एक पुस्तक, Mapping of River Ganga – A GIS Perspective तथा संस्थान द्वारा विकसित उत्पाद, Fish Thanawari का लोकार्पण किया गया। सभा के अंत में श्री राजीव लाल, संयुक्त निदेशक सह कुलसचिव ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। समस्त कार्यक्रमों का सफल कार्यान्वयन संस्थान के निदेशक, डा. बसंत कुमार दास के मार्गदर्शन में हुआ।



डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और महानिदेशक, भाकृअनुप का सिफरी में अनुसूचित जाति की महिला मछुआरों के साथ संवाद

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने संस्थान दौरे की अवधि में दिनांक 4 अक्टूबर, 2021 से चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम के 39 अनुसूचित जाति के महिला मछुआरों



से बातचीत की जो पश्चिम बंगाल के मालदा जिले से आयी थीं। उन्होंने सलाह दिया कि मछली उत्पादन बढ़ाने और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए अंतर्स्थलीय मछली पालकों के कौशल विकास के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों के सहयोग से इसी तरह के और अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

आयोजित किए जा सकते हैं। बैठक में डा. जयकृष्ण जेना, उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली उपस्थित थे। इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण, "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" का उदघाटन संस्थान के निदेशक, डॉ. बि.के. दास ने दिनांक 4 अक्टूबर, 2021 को किया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य अंतर्स्थलीय जल निकायों से मत्स्य उत्पादन को बढ़ाने के लिए सतत मत्स्य पालन प्रबंधन पद्धतियों पर क्षमता विकसित करना था। डॉ. दास ने प्रशिक्षुओं को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर अपने ज्ञान और कौशल को विकसित करने और आजीविका सुरक्षा के लिए रोजगार पैदा करने के कौशल को लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं को मछली पालन के विभिन्न पहलुओं जैसे तालाब की तैयारी, जल गुणवत्ता प्रबंधन, प्रेरित प्रजनन तकनीक, मिश्रित मछली पालन, नर्सरी पालन और तालाब प्रबंधन, छोटी देशी मछलियों का बहुपालन, मछली रोग प्रबंधन, फीड तैयार करना और सजावटी मछली पालन तकनीक पर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षुओं का जल गुणवत्ता विश्लेषण पर व्यावहारिक अभ्यास भी किया गया।

अंतर्स्थलीय जल में पालन प्रणाली के बारे में समग्र अभिविन्यास के लिए पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि में महिला प्रशिक्षुओं के लिए एक फील्ड एक्सपोजर दौरा भी आयोजित किया गया था। लगभग 91 प्रतिशत प्रशिक्षु इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से संतुष्ट थे और उन्हें अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के वैज्ञानिक पैकेज को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया था। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पी.के. परीदा, डॉ. अपर्णा राँय, डॉ. लियांथुआमलुआ और श्रीमती प्रज्ञा आर. स्वैन ने किया।



टैग की गई हिल्सा मछली गंगा नदी में 225 किलोमीटर की दूरी में पायी गयी



भाकृअनुप -केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, जलशक्ति मंत्रालय द्वारा स्वच्छ गंगा के लिए राष्ट्रीय मिशन (एनएमसीजी) के सहयोग से, वर्ष 2020 से गंगा नदी में हिल्सा, *टेनुओलोसा इलीशा* मछली पालन और सुधार कर रहा है। 1975 में गंगा नदी में फरक्का बैराज के निर्माण के बाद, हिलसा मत्स्य पालन भी काफी प्रभावित हुआ है। ऐसा देखा गया कि गंगा नदी के मध्य हिस्सों में उत्पादन शून्य तक पहुंच गया है (फरक्का से प्रयागराज, अध्ययन खंड)। गंगा नदी में हिल्सा के वर्तमान प्रवासी पैटर्न को समझने के लिए 250 ग्राम से अधिक औसत वजन की जीवित मछलियों को फ्लोट-बार एंकर टैग के द्वारा टैग किया जा रहा है। नवंबर 2020 से अब तक गंगा नदी में कुल 391 टैग की गई जीवित हिल्सा छोड़ी जा चुकी है। 6 अक्टूबर 2021 (17:30 बजे) को एक दिलचस्प परिणाम मिला, कि एक मछुआरे ने निमैतीर्थ घाट, बैद्यबाटी, हुगली जिला, पश्चिम बंगाल (22° 47' 29.5 "एन; 88° 20' 18.8" ई) में एक हिल्सा को पकड़ा,

जिसे, 1 अक्टूबर 2021 (20:00 बजे) को फरक्का (24° 48'14.93"N; 87° 55'55.69"E) में सीआईएफआरआई 1516 नंबर टैग द्वारा टैग किया गया था (सम्मिलित चित्र)। इस महत्वपूर्ण अवलोकन से यह पता चलता है कि मछली 4दिन 21घंटे (117:3घंटे) की







अवधि के भीतर, टैग किए गए स्थल से 225 किलो मीटर नीचे की ओर जा चुकी है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि, गंगा नदी के 225 किमी के निचले हिस्से में, 95 किमी का खंड मीठे पानी का ज्वारीय खंड है जो नदी के खिंचाव के ज्वारीय धारा के अनुभव को दर्शाता है। ज्वारीय धारा हुए हिलसा प्रवास की गति 0.56 मीटर/सेकेंड के रूप में अनुमानित की गई थी। इसके अलावा, प्रवास की इस अवधि (4दिन 21घंटे) के दौरान वजन में 34 ग्राम की कमी दर्ज की गई है। यह दिलचस्प परिणाम भारत में प्रवासी मछली प्रजातियों में पाई गई पहला रिकॉर्ड है। हालाँकि, इस प्रवासी मछली के दिलचस्प परिणाम को एक गहन वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है। इसके साथ ही, भाकृअनुप -केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के एनएमसीजी-हिलसा परियोजना से जुड़े सभी वैज्ञानिक, और दल के अन्य सदस्यों का आभार स्वीकार करते हैं।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर ने 01

अक्टूबर 2021 को "अन्तर्स्थलीय खुले जल निकायों में मछली उत्पादकता का अनुमान" पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर ने 01 अक्टूबर 2021 को "अन्तर्स्थलीय खुले जल


Director of Fisheries is presenting

Lecture Topic

Recent advances in soil and water quality assessment for management of sustainable fisheries in inland open water

Dr. Ajoy Saha
Scientist
Regional Centre of ICAR-CIFRI, Bangalore
 Email: ajoysahacob@gmail.com



N

You

निकायों में मछली उत्पादकता का अनुमान" पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर ने 01 अक्टूबर 2021 को "अन्तर्स्थलीय खुले जल निकायों में मछली उत्पादकता का अनुमान" पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

संस्थान ने खालसी आर्द्रभूमि, पश्चिम बंगाल में 'फील्ड डे' का आयोजन किया



संस्थान ने 24 सितंबर 2021 को डीबीटी परियोजना के तहत विविध आय उत्पन्न करने वाले उद्यमों पर महिला लाभार्थियों को संवेदनशील बनाने के लिए हरिंगहाटा ब्लॉक, जिला नादिया, पश्चिम बंगाल के खालसी नामक आर्द्रभूमि में एक 'फील्ड डे' का आयोजन किया, जिसका शीर्षक था "वेटलैंड-आश्रित मछुआरा समुदाय की महिलाओं का सशक्तिकरण"। लागत प्रभावी प्रौद्योगिकियों के माध्यम से गंगा के मैदानी इलाकों को कम करना। कार्यक्रम में खालसी आर्द्रभूमि के निकटवर्ती गांवों खालसी, मठपारा, कानापुकुरडांगा, उत्तरब्रह्मपुर से कुल 71 प्रतिभागियों ने भाग लिया। परियोजना पीआई डॉ. अपर्णा रॉय ने पिछले वर्ष बनाए गए परियोजना घटकों की सफलता की जानकारी दी और महिलाओं को लगातार वर्षों में अपनी कड़ी मेहनत जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने परियोजना के तहत विभिन्न घटकों के लाभों और पोषण और आजीविका सुरक्षा में उनकी भूमिका के बारे में भी बताया।

अन्य परियोजना वैज्ञानिक डॉ. ए.के. बेरा और डॉ अरुण पंडित (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), प्रो पिंटू बंदोपाध्याय, डॉ संचिता मंडल (बीसीकेवी, कल्याणी) भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। डॉ. बंदोपाध्याय ने किसानों को किचन गार्डनिंग और मशरूम की खेती पर ध्यान केंद्रित करते हुए विभिन्न लागत प्रभावी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। बैकयार्ड पोल्ट्री घटक पर प्रकाश डालते हुए, डॉ. बेरा ने पक्षियों की स्वच्छता के रखरखाव के लिए किए जाने वाले उपायों और कुक्कुट उद्यमों की आर्थिक रूप से मजबूत बनने में भूमिका के बारे में बताया। डॉ. पंडित ने सामाजिक आर्थिक पर इसके प्रभाव सहित एफपीओ के गठन के विभिन्न घटकों और लाभों के आर्थिक पहलुओं के बारे में संक्षेप में चर्चा की। डॉ. मंडल ने मशरूम की खेती और किचन गार्डनिंग के विभिन्न तकनीकी पहलुओं के बारे में बताया। विशेषज्ञों ने सफल



महिलाओं को नए लाभार्थियों के साथ-साथ पड़ोसी महिला किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्हें यह भी बताया गया कि निदेशक डॉ.बि.के. दास ने संस्थान की तरफ से निरंतर सहयोग और सहायता का आश्वासन दिया है। संवेदीकरण कार्यक्रम के बाद आर्द्रभूमि में स्थापित चार कलमों में 420 किलोग्राम अच्छी गुणवत्ता वाले आईएमसी फिंगरलिंग का स्टॉक किया गया और सीआईएफआरआई केजग्रो फीड भी प्रदान किया गया।

डा. जे के जेना, उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद द्वारा बाढ़ प्रभावित मोयना मत्स्य फार्म का संदर्शन

डा. जे के जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद, नई दिल्ली ने आज प्रभावित मोयना मछली फार्म, मोयना, पूरबा मेदिनीपुर का दौरा किया, जहां आसपास के सात ब्लॉक के अंतर्गत 6000 हेक्टेयर भूमि सहित 8000 हेक्टेयर अवनत भूमि (depressed land) में गहन मछली पालन किया जा रहा है। इस पालन पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से 5 लाख से अधिक लोगों की आजीविका निर्भर करती है। इस अवसर पर डॉ जेना के साथ भाकृअनुप-सिफरी, बैरकपुर के निदेशक डॉ बि के दास, वैज्ञानिकगण तथा भाकृअनुप-सीफा के वैज्ञानिकगण भी उपस्थित थे।




डॉ. जेना को मोयना के मछुआरों ने मछली पालन में आने वाली बाधाओं जैसे गर्मी के दौरान पानी की कमी, मानसून में जलभराव, दूरदराज के हिस्सों में सड़क संपर्क का टूट जाना, पट्टा राशि का अधिक होना (रु. 1-1.5 लाख प्रति एकड़), मछलियों को रखने के लिए बर्फ कारखानो और पैकेजिंग या मत्स्ययन के उपरान्त प्रयोगशाला, रोग निदान सुविधाओं तथा वित्तीय संस्थानों से वित्तीय सहायता की कमी आदि। इस वैज्ञानिक-कृषक संवाद के दौरान मछुआरों को संबोधित करते हुए, डॉ जेना ने परिषद् के अधीनस्थ संस्थानों जैसे सीफरी, सीआईएफए और सीआईएफटी के माध्यम से मछुआरों के ज्ञान और कौशल विकास को मजबूत करने पर जोर दिया। उन्होंने आगे कहा कि वर्तमान उत्पादन में 7.5 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर की वृद्धि देखी गयी है और आने वाले दिनों में 15 टन फ्रीड की आवश्यकता होगी पर जल की गुणवत्ता और सतत उत्पादन चिंता का विषय है। उन्होंने किसानों को इस विशाल क्षेत्र के उत्पादन और उत्पादकता को बनाए रखने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए कहा। उन्होंने आगे यह बताया कि हितधारकों के व्यापक परिप्रेक्ष्य में केंद्र-राज्य समन्वय को देखते हुए मत्स्य पालन क्षेत्र के लिए केंद्रीय योजनाओं के माध्यम से हितधारकों की आय में वृद्धि करना चाहिए। मत्स्ययन के पश्चात आईसीएआर-सीआईएफटी, कोचीन द्वारा फीड मिल और बर्फ कारखानों की स्थापना के लिए उद्यमियों को प्रेरित करना, रोग निदान और जल गुणवत्ता विश्लेषण के लिए सीआईएफए और सिफरी के माध्यम से आवश्यकता आधारित प्रयोगशाला सहायता प्रदान करना - जैसे कदम उठाया जाना चाहिए। डॉ. बि. के. दास ने हितधारकों से सिफरी में मछली पालन के आधुनिक ज्ञान के साथ प्रशिक्षित होने के लिए आगे आने के लिए आग्रह किया। इसी प्रकार, सिफरी को मोयना मछली फार्मों में मत्स्य रोगों पर भी कार्य करना चाहिए। डॉ जेना और डॉ दास ने रामकृष्णन सोसाइटी ऑफ मोयना द्वारा संचालित पल्ली बांग्ला एफएम रेडियो के माध्यम से मोयना के लोगों को सम्भाषण किया। श्री शशांक मैती, अध्यक्ष और श्री विद्युत मैती ने इस बाढ़ के समय आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए मोयना मछली फार्म पर आने और उन्हें सम्बोधित करने के लिए डॉ. जेना और डॉ. दास को बहुत धन्यवाद दिया।

संस्थान के, प्रयागराज केन्द्र द्वारा ऑन लाइन मत्स्य प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन






ICAR-CIFRI@75



आज़ादी का
अमृत महोत्सव

प्रशिक्षण पुस्तिका


अंतर्स्थलीय खुले जल में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से मछुआरों की आय में वृद्धि

डॉ. एन. झा
डॉ. वी. आर. ठाकुर

डॉ. मोनिका गुप्ता
श्री जीतेंद्र कुमार

डॉ. अबसार आलम
श्री एस. के. शर्मा



भाकृअनुप- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान
क्षेत्रीय केंद्र- प्रयागराज- २११००२, उत्तरप्रदेश

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् -केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा “अंतर्स्थलीय खुले जल में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से मछुआरों की आय में वृद्धि” पर एक ऑन लाइन मत्स्य प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 4 अक्टूबर से 11 अक्टूबर 2021 के अवधि में सम्पन्न हुआ था जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के मछुआरों, मत्स्य पालक, मत्स्य उद्यमी, छात्र, विश्वविद्यालय के अध्यापक आदि सहित 100 से ज्यादा प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान खुले जल क्षेत्र में मत्स्य और मात्स्यिकी के विकास सहित मछली पालन के अद्यतन तकनीकियों को विस्तृत रूप में बताया गया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य मछुआरे और मत्स्य पालकों के आजीविका को बढ़ाने के उपायों को प्रतिभागियों को बताना था। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डा० बि. के. दास ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के महत्व के बारे में बताया तथा केन्द्राध्यक्ष डा० डी. एन. झा ने प्रशिक्षण और प्रतिभागियों के साथ साथ मत्स्य और मात्स्यिकी के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक डा० अबसार आलम, डा० वेंकटेश ठाकुर, डॉ. मोनिका गुप्ता, डा० जितेंद्र कुमार, डा० श्रवण कुमार आदि ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया। प्रशिक्षण के समापन पर प्रशिक्षणार्थियों के लिए एक प्रशिक्षण पुस्तिका का विमोचन किया गया जिसे सभी प्रतिभागियों को दिया गया।

"कोरोना का गंगा की मछलियों पर नहीं है प्रभाव" सिफरी द्वारा आयोजित वेबिनार का निष्कर्ष



भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् -केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा गंगा के पारिस्थितिकी और मात्स्यिकी पर COVID-19 महामारी का प्रभाव : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर एक “एक दिवसीय” वेबिनार का आयोजन 18 अक्टूबर 2021 को हुआ। सिफरी प्रयागराज केंद्र के केंद्राध्यक्ष डॉ धर्म नाथ झा ने विषय विशेषज्ञों तथा वेबिनार के प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा वेबिनार के उद्देश्यों को बताया।

वेबिनार में चार विषय विशेषज्ञों ने संबोधित किया। संस्थान के निदेशक डा० बि. के. दास ने गंगा के मत्स्य और मात्स्यिकी के महत्व के बारे में विस्तार से बताया तथा मछुआरों को COVID-19 के नवाचार को अपनाते हुए मछली पकड़ने की सालह दी। डॉ रुचि बडोला, वरिष्ठ प्रोफेसर, भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून ने गंगा तथा जैव विविधता के संरक्षण में गंगा प्रहरी के कार्यों को लोगों से साझा किया। प्रो. बी डी जोशी, अवकाश प्राप्त, प्रोफेसर गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने अपने सम्बोधन में गंगा के परिस्थितिकी पर COVID-19 के प्रभाव को विस्तार से समझाया तथा गंगा को स्वस्थ और स्वच्छ रखने के लिए लोगों से विभिन्न उपायों को अपनाने को कहा। डॉ एस. के. मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक, सिफरी, बैरकपुर ने अपने व्याख्यान में बताया की कोरोना का प्रभाव मछली पर नहीं पाया गया है। इसलिए गंगा की मछलियों को सभी लोग निर्भय हो कर खा सकते हैं, इसको खाने से कोरोना का कोई भी खतरा नहीं पाया गया है। अतः गंगा तट पे निवास करने वाले एवं सभी लोगों से अनुरोध है कि बाज़ार से गंगा की मछलियों को खरीद कर खाएं और स्वस्थ रहे।

यह कार्यक्रम ऑन लाइन zoom के माध्यम से आयोजित किया गया जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के मछुआरें, मत्स्य पालक, मत्स्य उद्यमी, छात्र, विश्वविद्यालय के अध्यापक आदि सहित 100 से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में गंगा विचारमंच के प्रतिनिधि श्री राजेश शर्मा, गंगा टास्क फोर्स के कर्नल विनीत सेठ और गंगा प्रहरी के प्रतिनिधि आदि ने भाग लिया। श्री राजेश शर्मा ने लोगों से गंगा को स्वच्छ रखने का अहवाहन किया। कार्यक्रम के अंत में संस्थान के वैज्ञानिक डा० अबसार आलम ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा अन्य वैज्ञानिक डा० वेंकटेश ठाकुर, डा० जितेंद्र कुमार, डा० श्रवण कुमार शर्मा आदि ने संचालन में सहयोग किया।

प्रयागराज, मंगलवार 19 अक्टूबर 2021 2

कोरोना का गंगा की मछलियों पर नहीं है प्रभाव, सिफरी द्वारा आयोजित वेबिनार का निष्कर्ष

प्रयागराज। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् -केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा गंगा के पारिस्थितिकी और मात्स्यिकी पर COVID-19 महामारी का प्रभाव : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर एक “एक दिवसीय” वेबिनार का आयोजन 18 अक्टूबर 2021 को हुआ, सिफरी प्रयागराज केंद्र के केंद्राध्यक्ष डॉ धर्म नाथ झा ने विषय विशेषज्ञों तथा वेबिनार के प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा वेबिनार के उद्देश्यों को बताया,वेबिनार को चार विषय विशेषज्ञों ने संबोधित किया, संस्थान के निदेशक डा० बि. के. दास ने गंगा के मत्स्य और मात्स्यिकी के महत्व के बारे में विस्तार से बताया तथा मछुआरों को COVID-19 के नवाचार को अपनाते हुए मछली पकड़ने की सालह दी,डॉ रुचि बडोला, वरिष्ठ प्रोफेसर, भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून ने गंगा तथा जैव विविधता के संरक्षण में गंगा प्रहरी के कार्यों को लोगों से साझा किया। प्रो. बी डी जोशी, अवकाश प्राप्त, प्रोफेसर गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने अपने सम्बोधन में गंगा के परिस्थितिकी पर COVID-19 के प्रभाव को विस्तार से समझाया तथा गंगा को स्वस्थ और स्वच्छ रखने के लिए लोगों से विभिन्न उपायों को अपनाने को कहा। डॉ एस. के. मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक, सिफरी, बैरकपुर ने अपने व्याख्यान में बताया की कोरोना का प्रभाव मछली पर नहीं पाया गया है,इसको खाने से कोरोना का कोई भी खतरा नहीं पाया गया है,अतः गंगा तट पे निवास करने वाले एवं सभी लोगों से अनुरोध है कि बाज़ार से गंगा की मछलियों को खरीद कर खाएं और स्वस्थ रहे,यह कार्यक्रम ऑन लाइन zoom के माध्यम से आयोजित किया गया

आयोजित किया गया

के कार्य को लोगों से साझा कार्यक्रम ऑन लाइन zoom के माध्यम से आयोजित किया गया

जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के मछुआरें, मत्स्य पालक,मत्स्य उद्यमी,छात्र, विश्वविद्यालय के अध्यापक आदि सहित 100 से ज्यादा लोगों ने भाग लिया,कार्यक्रम में गंगा विचारमंच के प्रतिनिधि श्री राजेश शर्मा,गंगा टास्क फोर्स के कर्नल विनीत सेठ और गंगा प्रहरी के प्रतिनिधि आदि ने भाग लिया,श्री राजेश शर्मा ने लोगों से गंगा को स्वच्छ रखने का आह्वान किया,कार्यक्रम के अंत में संस्थान के वैज्ञानिक डा० अबसार आलम ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा अन्य वैज्ञानिक डा० वेंकटेश ठाकुर,डा० जितेंद्र कुमार,डा० श्रवण कुमार शर्मा आदि ने संचालन किया।

एससीएसपी और एसटीसी के तहत सागर द्वीप, सुंदरबन में यास (वाईएएस) से प्रभावित मछुआरों के लिए जागरूकता कार्यक्रम

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् -केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, एससीएसपी और एसटीसी कार्यक्रम के तहत भारत के विभिन्न हिस्सों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय के आजीविका विकास के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। इसी क्रम में संस्थान ने 20 अक्टूबर 2021 को सागर द्वीप, सुंदरबन, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय की आजीविका के विकास के लिए जागरूकता और मात्स्यिकी क्षेत्र में कौशल विकास के माध्यम से सागरद्वीप के यास प्रभावित लोगों के लिए मत्स्य पालन में वृद्धि करने



के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास ने कार्यक्रम में 105 अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के मछली किसानों को संबोधित किया। डॉ. दास ने ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका विकास के लिए मत्स्य पालन के दायरे और उसके महत्व के बारे में बताया। उन्होंने मछुआरों को सलाह दी कि वे मत्स्य पालन गतिविधियों से अपनी आय को दोगुना करने के लिए एससीएसपी और एसटीसी कार्यक्रम के तहत मत्स्य पालन विकास योजना को गंभीरता से लें। इस अवसर पर निदेशक ने 105 मछुआरों को मछली बीज वितरित

किया। यह निर्णय लिया गया कि इस वर्ष संस्थान 250 अनुसूचित जाति और 100 अनुसूचित जनजाति मछुआरों को मछली बीज, चूना और अन्य मत्स्य पालन उपकरण प्रदान करके उनकी आजीविका में सुधार के लिए समर्थन करेगा। पश्चिम बंगाल सरकार के सुंदरबन क्षेत्रीय मामलों के माननीय मंत्री श्री. बी.सी.हाजरा ने संस्थान द्वारा सागरद्वीप में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय के विकास की पहल की अत्यधिक सराहना की। बैठक में उपस्थित एनएमसीजी के सलाहकार डॉ. संदीप बेहरा ने अपने आधिकारिक संबोधन में गंगा नदी में जैव विविधता के संरक्षण और आवास संरक्षण के महत्व के बारे में बताया। संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. पी.के. परिदा, डॉ. ए.के. साहू और डॉ. लियांथुआमलुआ ने कार्यक्रम का समन्वयन किया।



भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने मत्स्य पालन निदेशालय, ओडिशा सरकार के साथ समझौता ज्ञापन



भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने "केज कल्चर प्रोग्राम के तहत हीराकुंड जलाशय में पर्यावरण और जलीय पशु स्वास्थ्य निगरानी" पर परामर्श परियोजना के लिए 28 अक्टूबर 2021 को कटक, ओडिशा में मत्स्य पालन निदेशालय, ओडिशा सरकार के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर डॉ. बसंत कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और श्री एस. आर. प्रधान, आईएएस, निदेशक, मत्स्य निदेशालय, ओडिशा सरकार की ओर से हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर श्री देवानंद



भांजा, अतिरिक्त निदेशक; श्री शशि आचार्य, संयुक्त निदेशक और श्री प्रशांत पाणिग्रही, एडीएफ, मत्स्य पालन निदेशालय, ओडिशा से और संस्थान से डॉ. पी. के. परिदा उपस्थित थे।

"केज कल्चर कार्यक्रम के तहत हीराकुंड जलाशय में पर्यावरण और जलीय पशु स्वास्थ्य निगरानी" पांच साल की अवधि का एक परियोजना कार्यक्रम है। इस परियोजना कार्यक्रम में हीराकुंड जलाशय में केज कल्चर के माध्यम से मत्स्य पालन के लिए पर्यावरण और पारिस्थितिक गुणवत्ता संकेतकों के परियोजना परिणाम और हीराकुंड जलाशय में मछली रोग निगरानी और परामर्श कार्य पर ध्यान केंद्रित किया जायगा।

मणिपुर के बिष्णुपुर जिले के टकमू पाट में पेंगबा, ऑस्टियोब्रामा बेलंगेरी का केज में सफल प्रदर्शन किया गया

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), बैरकपुर ने मणिपुर के मात्स्यिकी विभाग के सहयोग से एनईएच घटक के तहत मणिपुर के बिष्णुपुर जिले के टकमू पाट में एचडीपीई मॉड्यूलर केज में स्थानिक कार्प, *ऑस्टियोब्रामा बेलंगेरी* के पालन



का सफलतापूर्वक आयोजन किया। *ओ. बेलंगेरी* (7-10 ग्राम) की उंगलिमीनों को 10 केज (6 x 4 x 2 मीटर के केज) में रखा गया था और 6 महीने के लिए पाला गया था और सीआईएफआरआई केजग्री फीड के साथ दिन में दो बार 3-5% शरीर के साथ खिलाया गया था। कल्चर की अवधि के बाद, मछली का औसत वजन 120 ग्राम प्रति मछली हो गया था। कुछ छोटी मछलियों को उनके आगे के विकास और संरक्षण के उद्देश्य के लिए पैट (झील) में छोड़ा गया था। मछलियों को छोड़ने के अवसर पर, 28.10.2021 को टकमू पट केज कल्चर साइट पर एक फील्ड-डे आयोजित किया गया था, जिसमें मत्स्य अधिकारियों, मछुआरों और अन्य प्रतिभागियों के साथ उच्च स्थानीय मांग वाली स्वदेशी प्रजातियों की केज में खेती के परिणाम साझा किए गए थे। और भविष्य के प्रयोगों के लिए सुझाव भी मांगे गए थे।



कार्यक्रम में श्री के. दिनेश्वर सिंह, डीएफओ बिष्णुपुर जिला, मणिपुर; मत्स्य पालन विभाग, और उनके साथी अधिकारी के. राजीव सिंह, ओ. माईपक सिंह, टी. जाँयकुमार सिंह शामिल थे। संस्थान के वैज्ञानिक (डॉ. सोना येंगकोकपम, सुश्री टी. निरुपदा चानू और डॉ. समरेंद्र सिंह) और 50 से अधिक मछुआरे भी इसमें शामिल हुए। श्री के. राजीव सिंह ने सिफरी के वैज्ञानिकों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. सोना येंगकोकपम ने पैट में किए गए केज कल्चर के प्रदर्शन की एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि दी। उन्होंने संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास और एनईएच घटक के समन्वयक और डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, प्रमुख (कार्यवाहक), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और एनईएच घटक के पीआई को धन्यवाद दिया केज कल्चर के प्रदर्शन की योजना और निष्पादन के लिए। सुश्री निरुपदा चानू ने लोकतक झील के मत्स्य पालन और स्थानीय देशी मछलियों के संरक्षण की आवश्यकता के बारे में बताया। डॉ. समरेंद्र सिंह ने जल गुणवत्ता मानकों के महत्व के बारे में चर्चा की। श्री के. दिनेश्वर सिंह ने विभाग के साथ सहयोग करने और केज के संवर्धन प्रदर्शन के लिए इनपुट प्रदान करने के लिए संस्थान का आभार व्यक्त किया। उन्होंने किसानों से ज्ञान प्राप्त करने और मणिपुर की आर्द्रभूमि/झीलों में केज में जलीय कृषि की क्षमता का दोहन करने का आग्रह किया। मछुआरों ने बातचीत की और उनसे संपर्क करने के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया और आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के विकास के लिए एकजुट होकर काम करने का संकल्प लिया। श्री ओ. माईपक सिंह ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने मैपिथेल जलाशय, मणिपुर में एनक्लोजर कल्चर पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजन किया



मणिपुर मत्स्य पालन विभाग के सहयोग से भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा 'जलाशय में मछली उत्पादन के लिए संलग्नक मत्स्य पालन' पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। मणिपुर के मैपिथेल बांध, कामजोंग जिला, मणिपुर में 29.10.2021 को संस्थान के एनईएच घटक के तहत इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मैपिथेल बांध एक नया बांध है (27 दिसंबर, 2020 को चालू हुआ) और 1182 हेक्टेयर क्षेत्र के साथ मणिपुर का सबसे बड़ा जलाशय है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र के विस्थापित किसानों के लिए आजीविका विकल्प के रूप में संलग्न जलीय कृषि के बारे में जागरूकता पैदा करना और उन्हें इस विषय पर शिक्षित करना था। जागरूकता कार्यक्रम में श्री कामशिंग अहूम, मत्स्य पालन के अतिरिक्त निदेशक, मणिपुर ने भाग लिया; श्री वाई. नबचंद्र, डीएफओ, उखरूल जिला और मत्स्य अधिकारी (श्री एन. हेमचंद्र, मत्स्य अधिकारी; श्री सुरेश सिंह, मत्स्य निरीक्षक); श्री रोक्ससन कासुंग, प्रगतिशील मछली किसान; स्थानीय प्रतिभागियों और संस्थान के टीम (डॉ. सोना येंगकोकपम, वरिष्ठ वैज्ञानिक; डॉ. एन. समरेंद्र सिंह, वैज्ञानिक और सुश्री टी. निरुपदा चानू, वैज्ञानिक) शामिल थे। कार्यक्रम में गांव के कुल 38 मछुआरों ने भाग लिया। श्री कामशिंग अहमम ने अधिकारियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि मैपिथेल बांध में मत्स्य पालन के विकास की अपार संभावनाएं हैं। बांध के कारण विस्थापित हुए स्थानीय लोगों के पास अपनी आजीविका के लिए अधिक विकल्प नहीं हैं और इसलिए उनमें से कुछ ने अपने दम पर केज में मछली पालन की शुरुआत की है। हालांकि, उनके पास केज में खेती से संबंधित ज्यादा ज्ञान और वैज्ञानिक प्रोटोकॉल नहीं है। इस पृष्ठभूमि में, मणिपुर सरकार के मत्स्य पालन विभाग संस्थान से जलाशय में केज में खेती के बारे में प्रशिक्षण प्रदान करने और जागरूकता पैदा करने का आग्रह किया। श्री वाई. नबचंद्र सिंह ने राज्य के सुदूर क्षेत्र में पहुंचने के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया और भविष्य में किसी भी सहयोग के लिए विभाग से पूर्ण

सहायता और समर्थन का आश्वासन दिया। डॉ. सोना येंगकोकपम ने केज के निर्माण, स्थापना, मछली के बीज का भंडारण, चारा और अन्य प्रबंधन प्रथाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। सुश्री निरुपदा चानू ने मछुआरों को सलाह दी कि वे जलाशय में प्रजनन के मौसम के दौरान मछली पकड़ने पर प्रतिबंध का पालन करें। श्री रॉक्ससन कासुंग ने बताया कि वर्तमान में बांध में 126 केज की इकाइयां हैं, जिनमें से कई इनपुट की कमी के कारण अभी तक चालू नहीं हुई हैं। उन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजकों को धन्यवाद दिया और इस कार्यक्रम के माध्यम से प्राप्त ज्ञान का उपयोग करने का वादा किया।



मुख्य शोध उपलब्धियां

- भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने फरका बैराज के अपस्ट्रीम में 18 टैग की गई मछलियों (68-782 ग्राम) सहित कुल 747 हिल्सा मछलियों का प्रजनन किया। फरका बैराज के अपस्ट्रीम पर एक टैग किया हुआ हिलसा (टैग संख्या 1516) बरामद किया गया। बरामद किया गया हिलसा 4 दिन और 22 घंटे (2.54 किमी/घंटा) में 300 किमी तक माईग्रेट कर चुका था।
- बैरकपुर, पटना और प्रयागराज में गंगा नदी में मत्स्य अवतरण क्रमशः 0.07, 0.314 और 0.222 टन था।
- पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के पांच छोटे जलाशय बेको, फुतियारी, पटलोई, लोहारशोल और मुर्गुमा का सर्वेक्षण किया गया और पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन क्षमता का आकलन किया गया। अध्ययन में देखा गया की अंगुलिकाओं का भंडारण न होने के कारण मत्स्य पालन की उत्पादक प्रकृति मध्यम मान की हैं। ये जलाशय मछली विविधता (22-35 प्रजातियों) में मध्यम स्तर में आते हैं और अंगुलिकाओं के स्टॉकिंग कार्यक्रमों के माध्यम से मत्स्य पालन में वृद्धि की व्यापक गुंजाइश प्रदान करते हैं।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने 23 सितंबर, 2021 को राष्ट्रीय समिति द्वारा आयोजित की गई 30 वी बैठक जो भारतीय जलीय क्षेत्र में विदेशी प्रजातियों का परिचय पर आधारित थी उसमें भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने 27 सितंबर, 2021 को एनआईसी एमओईएफएंडसीसी द्वारा आयोजित 17वीं ईएसी - नदी घाटी परियोजनाओं के बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने 29 सितंबर, 2021 को ट्रोसा और ऑक्सफैम द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित मात्स्यिकी प्रबंधन पर क्षेत्रीय एमएसपी संवाद में भाग लिया, जिसमें विशेष रूप से सीखने के तरीके, चुनौतियों, कानूनी पहलू पर जोर दिया गया, और जहां उन्होंने "सीखने के तरीके, चुनौतियां और एएमपी; क्षेत्रीय मात्स्यिकी प्रबंधन के मुद्दे" पर पैनल चर्चा के एक सत्र की अध्यक्षता की।
- संस्थान के निदेशक ने 30 सितंबर, 2021 को सी-डैक, कोलकाता द्वारा आयोजित केज में आईओटी आधारित डीओ निगरानी पर एक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने 1 अक्टूबर, 2021 को पश्चिम बंगाल जैव विविधता बोर्ड द्वारा आयोजित जैव संसाधनों के व्यावसायिक उपयोग के लिए समिति की 18वीं बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने 1 अक्टूबर, 2021 को एफएओ परियोजना के संबंध में एक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने 13 अक्टूबर 2021 को नई दिल्ली में पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के शुभारंभ में भाग लिया।

अन्य

- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने 21 सितंबर 2021 को ऑनलाइन मोड में 'हिंदी सप्ताह समापन' कार्यक्रम आयोजित किया।

- संस्थान ने 1 अक्टूबर 2021 को एफएओ तकनीकी पेपर की प्रगति पर आयोजित एक बैठक में भाग लिया, जिसमें डॉ. वी.वी. सुगुनन, वरिष्ठ विशेषज्ञ (समन्वयक), एफएओ-सिफरी परियोजना शामिल थे।
- संस्थान ने 2 अक्टूबर 2021 को 'स्वच्छ भारत' माह की उद्घाटन गतिविधियों का आयोजन किया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने 5 अक्टूबर 2021 को आयोजित उपमहानिदेशक (वित्तीय विभाग), आईसीएआर, नई दिल्ली के साथ संवादात्मक बैठक में भाग लिया।
- माननीय सचिव डेयर और डीजी आईसीएआर ने 6 अक्टूबर 2021 को औपचारिक रूप से "फिश तनावहरी" एक हर्बल मूल पर्यावरण के अनुकूल मछली संवेदनाहारी / शामक उत्पाद जारी किया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने 6 अक्टूबर 2021 को सचिव डेयर और महानिदेशक, भाकृअनुप की इंटरैक्टिव बैठक में भाग लिया।
- संस्थान ने 18 अक्टूबर 2021 को 'गंगा नदी की पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन पर कोविड-19 महामारी के प्रभाव' पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया।
- संस्थान ने 22 सितंबर 2021 को अनुसूचित जनजाति घटक (एसटीसी) के तहत ऑनलाइन मोड में हितधारकों की बैठक बैरकपुर में आयोजित की।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज ने ऑनलाइन मोड के माध्यम से आयकर विभाग, प्रयागराज, भारत सरकार द्वारा 23 सितंबर 2021 को नरकास / टॉलिक की छह माही बैठक में भाग लिया।

प्रशिक्षण

- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने एएफडीसी लिमिटेड, गुवाहाटी के सहयोग से दिनांक 01.09.21 को एक्वाकल्चर में सिस्टम विविधीकरण पर राष्ट्रीय अभियान के तहत "बील से संवर्धित मछली उत्पादन के लिए संलग्नक कल्चर" पर घोरजन बील, अमिनगांव में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में बयालीस बील मछुआरों, उद्यमियों और त्रिमूर्ति बहुउद्देशीय सहकारी समिति, कामरूप (ग्रामीण), असम के सदस्यों ने भाग लिया।
- संस्थान के, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन अधीक्षक के प्रशिक्षण कक्ष में किया गया। मत्स्य विभाग, गंडाचेरा, धलाई जिला त्रिपुरा के मत्स्य पालन विभाग, के सहयोग से। एनईएच घटक के तहत 07.09.2021 को "त्रिपुरा के उन्नत मछली उत्पादन के लिए केज कल्चर" पर आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में 50 मछुआरों ने भाग लिया।
- संस्थान के, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने सितंबर 23-25, 2021 के दौरान असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड गुवाहाटी के सहयोग से डंडुआ बील, मोरीगांव जिला, असम में "बील में मछली उत्पादन बढ़ाने की रणनीति" पर ऑन-फील्ड प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में तीस सक्रिय मछुआरों ने भाग लिया।
- संस्थान के, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने 29 सितंबर से 1 अक्टूबर, 2021 के दौरान असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड, गुवाहाटी के सहयोग से 46-मोराकोलॉग, मोरीगांव जिला, असम में "बील में मत्स्य

पालन वृद्धि के विकल्प" पर ऑन-फील्ड प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में अट्टाईस सक्रिय मछुआरों ने भाग लिया।

- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने 01 अक्टूबर 2021 को " अंतर्स्थलीय खुले जल निकायों में मछली उत्पादकता का आकलन" पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरीज टेक्नोलॉजी (एसआईएफटी), काकीनाडा, आंध्र प्रदेश से इकतीस नए नियुक्त मात्स्यिकी विकास अधिकारियों ने सेवा प्रशिक्षण कार्यक्रम के रूप में इस प्रशिक्षण में भाग लिया।

- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज ने 4 अक्टूबर से 11 अक्टूबर 2021 तक "अंतर्स्थलीय खुले जल में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से मछुआरों की आय में वृद्धि" पर एक सप्ताह का ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कुल 144 मछुआरे, मछली किसान, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखंड, मणिपुर और तेलंगाना राज्यों के छात्रों, विभाग के अधिकारियों और मछली व्यवसायियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

- संस्थान ने 6 अक्टूबर 2021 को गांधी घाट, बैरकपुर में गंगा नदी के घटते मछली स्टॉक के बारे में हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा करने के साथ-साथ मछलियों और डॉल्फिन के साथ-साथ हिल्सा मत्स्य पालन को बनाए रखने के लिए गंगा नदी की आवश्यक परिस्थिति के महत्व के बारे में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

- फरका के विभिन्न स्थानों पर हिल्सा संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। 1 से 16 अक्टूबर 2021 के दौरान 11 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए और 376 मछुआरों को जागरूक किया गया।

- संस्थान ने 12 अक्टूबर 2021 को बैरकपुर में पश्चिम बंगाल के गांवों की अनुसूचित जाति समुदाय की महिला किसानों के बीच "अपशिष्ट से धन" पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया, जहां किसानों को वर्मी कम्पोस्ट की अवधारणा, इसके लाभों से परिचित कराया गया। वर्मी कम्पोस्ट बनाने की विधियाँ, कम्पोस्टिंग सामग्री के प्रकार और इसे अपने दैनिक कृषि कार्यों में शामिल करने का सुझाव दिया गया।

सेवानिवृत्ति

सुश्री सोहिनी चैटर्जी, आशुलिपिक

संस्थान के निदेशक कक्ष में कार्यरत सुश्री सोहिनी चैटर्जी,



आशुलिपिक दिनांक 31 अक्टूबर 2021 को संस्थान सेवा से मुक्त हुई तथा केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (Central board of Direct Taxes & Customs) में ग्रुप-बी अधिकारी के तौर पर कार्यभार संभाला है। सुश्री सोहिनी ने वर्ष मार्च 2019 में संस्थान में अपना कार्यारंभ किया

था। अपने इस 3 वर्ष के कार्यकाल में वह अपने नियमित कार्यों के अलावा भी संस्थान के सांस्कृतिक गतिविधियों में बहुत सक्रिय रही हैं। संस्थान सुश्री सोहिनी को उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है कि वे आगे भी सफलता की नई ऊंचाईयां प्राप्त करें।

श्रीमती श्यामली मित्रा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी

संस्थान मुख्यालय में कार्यरत श्रीमती श्यामली मित्रा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी ने दिनांक 31 अक्टूबर 2021 को संस्थान की सेवा से अवकाश प्राप्त किया। श्रीमती श्यामली मित्रा ने संस्थान में



अपना कार्यकाल दिनांक 02.12.1989 को कनिष्ठ लिपिक के तौर पर आरंभ किया था। अपने इस 35 वर्षों के सेवाकाल में उन्हें कई पदोन्नति मिली - वर्ष 1998 में वरिष्ठ लिपिक, वर्ष 2014 में सहायक और वर्ष 2021 में सहायक प्रशासनिक अधिकारी। संस्थान श्रीमती श्यामली मित्रा को स्वस्थ एवं सुखी अवकाश जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता है।

डा. एस के एस एस हमीद, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

संस्थान के मात्स्यिकी संसाधन एवं पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग में कार्यरत डा. एस. के. एस. एस. हमीद, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने दिनांक 31 अक्टूबर 2021 को संस्थान की सेवा से



अवकाश प्राप्त किया। डा. हमीद ने संस्थान में अपना कार्यकाल दिनांक 30.11.1989 को तकनीकी अधिकारी के तौर पर आरंभ किया था। अपने मुख्य कार्य के साथ उनका संस्थान के अन्य कार्यों में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्ष 2000 में उन्हें वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी के पद में पदोन्नति मिली। वर्ष 2012 में उन्होंने अपना पीएचडी पूरा किया। संस्थान उन्हें स्वस्थ एवं सुखी अवकाश जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता है।

